JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिला उद्यमिता और सरकारी भूमिका : वर्तमान परिदृश्य भारत के संदर्भ में

'सुजाता परी अहिरवाल "प्रो.जिनेन्द्र कुमार जैन

डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र.

'शोधार्थी – वाणिज्य विभाग, डॉ. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र.

"प्रोफेसर– वाणिज्य विभाग डॉ. हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र

(E-Mail- sujatap2393@gmail.com)

(Dr.jinendrakumarjain@gmail.com)

सारांश

किसी भी देश के मानव संसाधन के विकास हेतु महिलाओं व पुरूषों की समान भागीदारी आवश्यक **है**। महिलाओं का जीवन सुरक्षित और भविष्य उज्जवल हो, उन्हें बराबरी का दर्जा और सम्मान मिले समाज और परिवार उनका आदर करें। उद्यमिता, जो व्यवसाय व्यवस्था की छत्रछाया में आती है, जो संगठनों की स्थापना करके देश और उसकी अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, वर्तमान समय में भारत में आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों से आर्थिक विकास का क्षेत्र बढ़ता जा रहा है। व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्र में तीव्रगति से परिवर्तन होने लगा है जिसके कारण उद्यमिता का महत्व भी बढ़ता जा रहा है और सरकार उद्यमिता को प्रोत्साहित कर रही है, जिससे अच्छी आर्थिक स्थिति प्राप्त करने के लिए रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी उन्मूलन किया जा सके। सरकार, बैंक स्टार्टअप इंडिया, महिलाओं के लिए मुद्रा योजना, अन्नपूर्णा योजना, महिला उद्यमियों के लिए स्त्री शक्ति पैकेज, भारतीय महिला बैंक, व्यवसाय ऋण, महिला उद्यमी निधि योजना आदि जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं, महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे है। इस अध्ययन का उद्देश्य महिला उद्यमियों की वर्तमान स्थिति का आकलन, महिलाओं के लिए सरकारी सहायता एवं व्यवसाय संचालन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना है । तकनीकी रूप से महिला उद्यमिता ऐसी महिलाएं हैं जो भविष्य में होने वाले अनिश्चित जोखिमों से निपटने के लिए समृद्ध निर्णयों के साथ संगठन को व्यवस्थित और प्रबंधित करती हैं। यह अध्ययन पूर्ण रूप से वर्णनात्मक एवं द्वितीय आंकडों पर आधारित है, आंकडों का संग्रहणलेखों और वेबसाइटों के माध्यम से किया गया है। भारत में कई महिला उद्यमी हैं जो सफल तरीके से अपने अपने संगठन चला रही हैं।

मूल शब्द : महिला उद्यमिता, चुनौतियां, महिला उद्यमियों की समस्याए, सरकारी योजनाएं।

१.प्रस्तावना–

एक उद्यमी समाज के विकास में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है। आर्थिक विकास के लिए उद्यमशीलता और सतत् व्यापार में वृद्धि आवश्यक है। उद्यमियों का उदय, समाज में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक कारकों पर निर्भर करता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्व– नियोजित महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। अमेरिका में, सभी व्यवसायों में २५ प्रतिशत महिलाएं हैं, कनाडा में, एक तिहाई छोटे व्यवसाय महिलाओं के स्वामित्व में हैं और ब्रिटेन में स्वरोजगार करने वाले पुरुषों की संख्या के मुकाबले स्वरोजगार महिलाओं की संख्या तीन गुना बढ़ गई है। भारत में भी महिलाओं ने औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश किया है। देश में लघु उद्योगों में महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी ७.७ प्रतिशत है।

महिला उद्यमियों का योगदान, राजस्व उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में अपेक्षाकृत कम है, जो कि छोटे पैमाने की इकाईयों का केवल आठ प्रतिशत है, जबकि विकसित अर्थव्यवस्थाओं में राजस्व सृजन गतिविधियों में लगभग २५ प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी है। पिछले एक दशक में, दुनिया भर में महिलाओं ने स्वास्थ्य और शिक्षा, राजनीति और अन्य क्षेत्रों में काफी सुधार किया है। यह ऐसे समय में हो रहा है जब विश्व स्तर पर उद्यमिता को आर्थिक विकास और स्थिरता के लिए महत्तवपूर्ण माना जाता है।

भारत में शहरी आबादी में महिलाएं लगभग ४८.१ प्रतिशत और ग्रामीण आबादी में ४८.६ प्रतिशत हैं लेकिन आर्थिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी केवल ३४ प्रतिशत है। मानव विकास रिपोर्ट (२०१३) के अनुसार, भारत १८७ देशों के लिंग संबंधी विकास सूचकांक में १३२वें स्थान पर है।

१.१ उद्यमिता–

उद्यमिता किसी उपक्रम में जोखिम उठाने की क्षमता के साथ संगठन की योग्यता तथा विविधीकरण करने एवं नवप्रवर्तनों को जन्म देने की इच्छा है। इसमें व्यवसाय की जोखिमों को वहन करने की क्षमता के साथ साथ नवकरण करने की भावना भी सम्मिलित हैं।

आधुनिक अर्थ में उद्यमिता नये उपक्रम की स्थापना के, नियंत्रण एवं निर्देशन करने की योग्यता के साथ–साथ उपक्रम में नये–नये सुधार एवं परिवर्तन करने की साहसिक क्षमता भी है। उद्यमिता, जोखिम एवं अनिश्चितता को वहन करने की इच्छा है। यह नेतृत्व एवं नवप्रवर्तन का गुण है, जिसके द्वारा व्यवसाय में उच्च उपलब्धियों एवं लाभों को प्राप्त किया जा सकता है। आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण, ग्लोबलाइजेशन तथा कारपोरेटाइजेशन ने उद्यमिता के विचार को और ज्यादा महत्वपूर्ण बना दिया हैं। उद्यमिता के अर्थ को बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार समझने के लिए विभिन्न विद्वानों ने विचार प्रकट किये है।

जोसेफ शुम्पीटर के अनुसार, "उद्यमिता एक नवप्रवर्तनकारी कार्य है। यह स्वामित्व की अपेक्षा एक नेतृत्व कार्य है।"

यह परिभाषा उद्यमिता को नये परिप्रेक्ष्य में देखती है। 'नवप्रवर्तन' ही उद्यमिता का मुख्य तत्व है क्योंकि विकास की गति व्यवसाय में किये जाने वाले नये– नये परिवर्तनों, सुधारों व नवाचारों पर ही निर्भर करती है। यह विचारधारा जो कि नवप्रवर्तन पर आधारित है, केवल विकसित राष्ट्रों में ही अधिक उपयुक्त है। क्योंकि नवप्रवर्तन का कार्य अर्थव्यवस्था में सम्पूर्ण परिवर्तन लाने पर जोर देता है तथा यह केवल बड़े उद्योगों में ही सम्भव है। नवप्रवर्तन के लिए राष्ट्र में शैक्षिक, सामाजिक व तकनीकी का स्तर ऊँचा होना आवश्यक है।

१.२ उद्यमी

विकासशील अर्थव्यवस्था में अथवा औद्योगिक समाज में उद्यमी को एक प्रवर्तक, संगठनकर्ता एवं समन्वयकर्ता के रुप में देखा गया है। उद्यमी उस व्यक्ति को माना जाता है जो किसी नये व्यवसाय की स्थापना करता है, उत्पादन के साधनों को एकत्रित करता है, प्रबंधकीय निर्णय लेता है तथा समन्वय संबंधी विभिन्न कार्य करता है।

पीटर एफ. ड्रकर के अनुसार,"उद्यमी वह व्यक्ति है जो सदैव परिवर्तन की खोज करता है, उस पर प्रतिक्रिया करता है तथा एक अवसर के रुप में उसका लाभ उठाता है।"

१.३ महिला उद्यमिता

आधुनिक युग में, जब महिलाएं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर रही हैं, औद्योगिक विकास और आर्थिक विकास के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के उद्यमी वर्ग तेजी से प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

'महिला उद्यमिता' शब्द का अर्थ है, व्यवसाय के स्वामित्व और व्यवसाय निर्माण का एक कार्य जो महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है, उनकी आर्थिक ताकत के साथ.साथ समाज में स्थिति को बढ़ाता है।

महिला उद्यमी से आशय एक महिला या महिलाओं के समूह से है, जो किसी प्रकार की सेवा या वस्तु के उत्पादन हेतु उपक्रम की स्थापना, संचालन व नियंत्रण करती हैं। उपक्रम पर महिला उद्यमी का स्वामित्व हो, ५१ प्रतिशत पूंजी महिला की लगी हो एवं ५० प्रतिशत महिलाओं द्वारा उपक्रम का संचालन किया जा रहा हो।

२. अध्ययन की आवश्यकता

महिलाओं को भारत में एक सफल अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करना। महिला उद्यमियों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, सरकार भी महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर महिला उद्यमिता का समर्थन कर रही है, लेकिन बात यह है कि महिलाओं के पास उद्यमी बनने के लिए सरकार से मिलने वाले लाभों के बारे में जानकारी नहीं है। साथ ही भारत में कुछ बैंकों ने महिलाओं द्वारा लिए गए लाभों पर अपनी ब्याज दरों में कमी की है, और कई सूक्ष्म वित्त संस्थान भी एसएचजी (स्वयं सहायता समूहों) के माध्यम से महिलाओं की मदद कर रहे हैं, उनमें से कई ऐसी सुविधाओं को प्राप्त करने में कमी कर रहे हैं।

निजी क्षेत्र, शिक्षा के स्तर में सुधार कर सकता है और महिलाओं के कौशल को विकसित कर सकता है और महिलाओं को नए उपकरणों का उपयोग करने, नई प्रौद्योगिकियों का दोहन करने और मांग करने, उदारीकरण और नियामक सुधार के माध्यम से नए बाजारों में प्रवेश करने और विकास के लिए उपलब्ध अवसरों में सुधार करने की भी आवश्यकता है। रोजगार के अवसर पैदा करने और लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए विशेष रूप से कम विकसित क्षेत्र में उद्यमिता एक नया विचार है।

भारत में महिला उद्यमियों द्वारा किए जाने वाले व्यवसाय संचालन उन्हें निर्णय लेने, रणनीति योजना, मानव संसाधनों का प्रबंधन और संगठन के समग्र कामकाज जैसी कई बाधाएं आती हैं, जिनका वे सामना कर सकती हैं, क्योंकि वे एक समय में दो नावों में अपने कदम रखती है। एक उनका निजी जीवन है और दूसरा पेशेवर जीवन है। इसलिए शिक्षा महिला उद्यमिता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

३. साहित्य का पुनरावलोकन –

मनटोक सतानजिन(२०१६),मनटोक सतानजिन (२०१६)३३, अर्थव्यवस्था में महिलाओ में उद्यमिता की प्रभावशीलता महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दे रही है। महिला उद्यमिता, महिला सशक्तिकरण की ओर जा रही है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए महिलाओ के उद्यमशीलता कौशल के प्रभाव की खोज करना है। उद्यमी महिलाओ का सर्वेक्षण छोटे और मध्यम उद्यमो से किया गया है। **मनटोक सतानजिन** ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष मे पाया कि भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था में महिलाओं ने उद्यमिता में तेजी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिला उद्यमिता सकारात्मक और महत्वपूर्ण है, जो महिला सशक्तिकरण की ओर जाती है।

एम.राजेश्वरी(२०१५), भारत में महिला सशक्तिकरण के कारणों एवं चुनौतियों के अध्ययन में महिलाओं की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया गया, जिसमें महिला सभाक्तिकरण संबंधी बातों पर विशेष ध्यान दिया गया है। निष्कर्षत: अध्ययन का परिणाम यह है कि महिलाएँ अपेक्षाकृत सशक्त नहीं हैं एवं लिंग भेदभाव भी प्रचलित है।

अली यासिन शेख अली(२०१३), उद्यमी महिलाओं की उपलब्धि और अभिप्रेरणात्मक तत्व, अध्ययन में सोमाली की उद्यमी महिलाओं का व्यवसाय के संपादन में पुरूषों की तुलना में महिलाओं में स्वतंत्रता एवं सामाजिक मान्यता की कमी के कारण, उद्यमी महिलाओं की उपलब्धि और अभिप्रेरणा तत्व के बीच औसतन सह–संबंधिता पाई गई है।

सिंग रणवीर (२०१३),महिला उद्यमिता की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और सभांवनों का अध्ययन किया गया, जिसमें सामाजिक स्थिति, वित्तीय स्थिति एवं निर्णय लेने की स्थिति के आधार पर उद्यमी महिलाओं की वर्तमान स्थिति का एवं वित्तीय समस्याओ, विपणन समस्याओं के आधार के पर अध्ययन किया गया, जिसका निष्कर्ष यह है कि सरकारी एवं गैर–सरकारी एजेसिया जो महिला उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रही हैं, उसमें गैर–सरकारी सगंठनो ने महिलाओं को स्वयं का व्यवसाय शुरु करने के लिए अधिक प्रोत्साहित किया है।

नेंला कबीर (२०१२), के अध्ययन का उद्देश्य महिलाओ के आर्थिक सशक्तिकरण के संबंध में खोज करना था, इस अध्ययन में महिलाओ की शिक्षा के साथ रोजगार में वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई दिया। समावेशी विकास वह विकास है जो आर्थिक विकास और लिंग समानता को बताता है। **निष्कर्षत:** अध्ययन से पता चला है कि– औपचारिक रुप से किये गये कार्य में परिवर्तन सभंव है। घर के बाहर काम करने से महिलाओ के जीवन पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, इसके लिए महिलाओं को बेहतर नौकरी की जरुरत है। महिलाओ को उद्यम गतिविधि में लाने एवं सफल उद्यमी बनने के लिए अधिक प्रेरणा की आवश्यकता है।

वागुप्ता मीनाक्षी व शर्मा, पारुल (२०११), ने जम्मू –कश्मीर में महिला उद्यमिता के प्रेरक घटकों का अघ्ययन किया। २०० महिला उद्यमियों के अघ्ययन में यह पाया कि मुख्य पांच घटक महिला उद्यमियों के लिये प्रेरक रहे हैं–

१. स्वायत्तता एवं स्थाई आय

२. कार्य की लोचशीलता

३. कार्य कुशलता के उपयोग एवं विकास

४. सशक्तिकरण में सहायक

५. सामाजिक उत्तरदायित्व में वृद्धि

४. उद्देश्य–

१. भारत में महिला उद्यमियों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।

२. महिलाओं के प्रोत्साहन के लिए विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रारंभ किये गये कारकों का आकलन करना।

३. उद्यमी महिलाओं को व्यवसाय संचालन में आने वाली समस्याओं परीक्षण करना।

४. वर्तमान अध्ययन के आधार पर सुझाव एवं संस्तुति प्रदान करना

५. शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन पूर्ण रूप से वर्णनात्मक प्रकृति का है, एवं द्वितीय समंकों पर आधारित है। द्वितीय समंकों का संकलन जनगणना सर्वेक्षण, आर्थिक सर्वेक्षण , शोधपत्रों, समाचार पत्रों व पत्रिकाओं, आदि से किया गया है।

६. भारत में महिला उद्यमियों की स्थिति –

- ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप रिसर्च एसोसिएशन, लंदन बिजनेस स्कूल, लंदन के अनुसार, द ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप मॉनिटर (जीईएम) २०१६/२०१७ महिला रिपोर्ट इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में नीतिगत निर्णय लेने, पहल और कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार करने और भविष्य में अनुसंधान के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

- २०१३–१४ में महिलाओं के बीच कुल उद्यमशीलता गतिविधि ७ प्रतिशत थी, जो २०१५–१६ में बढ़कर १० प्रतिशत हो गई। २०१३–१४ में लिंग अंतर में ६ प्रतिशत की कमी आई और २०१५–१६ में यह लाभ ५ प्रतिशत तक कम हो गया।
- जर्मनी, जॉर्डन, इटली और फ्रांस में ३ प्रतिशत से सेनेगल में ३७ प्रतिशत तक उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी दुनिया भर में बहुत भिन्न है। जॉर्डन में, पुरुषों के व्यवसाय शुरू करने की महिलाओं की तुलना में ४ गुना अधिक संभावना है।
- महिलाओं के वियतनाम में व्यवसाय शुरू करने की पुरुषों की तुलना में एक तिहाई अधिक संभावना है। वास्तव में, ७४ राष्ट्रों में से केवल ५ राष्ट्रों में महिला उद्यमियों की दर पुरुषों से मेल खाती है या उससे अधिक है।
- अध्ययनों से पता चला है कि दुनिया के बाकी देशों की तुलना में भारत में महिलाओं के काम का योगदान कम है। भारत में महिलाओं की कार्य भागीदारी ३१.६ प्रतिशत है जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में यह ४५ प्रतिशत, यूके में ४३ प्रतिशत, कनाडा में ४२ प्रतिशत, फ्रांस ३२ प्रतिशत, इंडोनेशिया में ४० प्रतिशत, श्रीलंका और ब्राजील दोनों में ३५ प्रतिशत है।

भारत में, आम तौर पर, पुरुष उद्यमशीलता की दुनिया में पहल करते हैं। समय के साथ और बदलते सांस्कृतिक मानदंडों और साक्षरता दर में वृद्धि के साथ, भारतीय महिलाएं उद्यमिता को अपने करियर के रूप में स्वीकार कर रही हैं।

मीडिया की पहल और सक्रिय भागीदारी से महिलाएं अपने अधिकारों और नीतियों के प्रति जागरूक हो रही हैं। वे डिजाइनरों, आंतरिक सज्जाकारों, निर्यातकों, प्रकाशकों, परिधान निर्माताओं के रूप में अपने उद्यमशीलता के कैरियर को फल.फूल रहे हैं और अभी भी आर्थिक योगदान के लिए नए रास्ते तलाश रहे हैं।

भारत में महिला स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत स्तर की नीति पहल नीतियों का अंतिम उद्देश्य एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देना है जो एक संभावित कैरियर विकल्प के रूप में उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी ।

भारत में उद्यमी महिलाओं की संख्या–

राज्य	पंजीकृत इकाईयों की संख्या में	उद्यमी महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
तमिलनाडू	९६१८	२९३०	३०.३६
उत्तर प्रदेश	७९८०	३१८०	३९.८४
केरल	५४८७	२१३५	३८.९१
पंजाब	४७९१	१६१८	३३.७७
गुजरात	४३३९	१५३८	३२.१२
महाराष्ट्रा	३८७२	१३९४	३९.७२
कर्नाटक	३८२२	१०२६	२६.८४
मध्यप्रदेश	२९६७	०८४२	२८.३८

बिहार	७३४४	११२३	१५.०४
अन्य राज्य	१४५७६	४१८५	२८.७१
कुल	**६४,७९६**	**१९,९७१**	**३२.८२**

स्त्रोत– सीएमआईई रिपोर्ट, २०१३

उपरोक्त तालिका में देश के शीर्ष १० राज्यों में पंजीकृत इकाइयों की संख्या को दर्शाया गया है, जिसमें उत्तरप्रदेश में पंजीकृत इकाइयों की संख्या ३९.८४ प्रतिशत सर्वाधिक पंजीकृत इकाइयों वाला राज्य है। मध्य प्रदेश में पंजीकृत इकाइयों की संख्या अन्य राज्यों की तुलना में कम है । भारत में कुल पंजीकृत इकाइयों की संख्या ३२.८२ प्रतिशत हैं।

७. महिला उद्यमियों के विकास के लिए सरकार की पहल–

१. आजादी के बाद से ही महिलाओं का विकास सरकार का मिशन रहा है। ८० के दशक की शुरुआत से ही स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार ध्यान देने वाले क्षेत्र थे। महिलाओं को हर क्षेत्र में वरीयता दी जाती है। सरकार और अन्य एजेंसियों ने नियमित रूप से स्वरोजगार और औद्योगिक उपक्रमों के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के प्रयास किए हैं।

२. पहली पंचवर्षीय योजना (१९५१–५६) में महिलाओं के लिए कुछ कल्याणकारी योजनाएं, केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड (सीएसडब्ल्यूबी), महिला मंडल और सामुदायिक विकास कार्यक्रम (सीडीपी) शुरू की गई।

३. दूसरी पंचवर्षीय योजना (१९५६–६१) में, महिला सशक्तीकरण नीतियों को कृषि विकास कार्यक्रमों के साथ निकटता से जोड़ा गया था।

४. तीसरी और चौथी पंचवर्षीय योजनाओं (१९६१–६६ और १९६९–७४) में प्राथमिक कल्याणकारी उपाय के रूप में महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया।

५. पांचवी पंचवर्षीय योजना (१९७४–७९) में महिला प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी गई, जिन्हें आय और सुरक्षा की आवश्यकता थी। महिला कल्याण और विकास ब्यूरो (क्ठ) की स्थापना १९७६ में समाज कल्याण मंत्रालय के तहत की गई थी।

६. छठी पंचवर्षीय योजना (१९८०–८५) में, यह पाया गया कि संसाधनों तक पहुंच की कमी के कारण महिलाओं के विकास में कमी और कल्याण से विकास की ओर एक परिवर्तन था।

७. सातवीं पंचवर्षीय योजना (१९८५–९०) ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता की पहचान की व कौशल विकास और प्रशिक्षण के माध्यम से जागरूकता और आत्मविश्वास पैदा करने पर जोर दिया गया।

८. आठवीं पंचवर्षीय योजना (१९९२–९७) में पंचायती राज संस्थाओं की शुरुआत की गई थी जो जमीनी स्तर पर महिला–सशक्तिकरण पर झुकी हुई थीं।

९. नौवीं पंचवर्षीय योजना (१९९७–२००२) में महिला घटक योजना की एक रणनीति अपनाई गई थी जिसके तहत महिलाओं से संबंधित क्षेत्रों के लिए कम से कम ३० प्रतिशत निधि/लाभ निर्धारित किए गए थे।

१०. महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से, दसवीं पंचवर्षीय योजना (२००२–०७) में राष्ट्रीय महिला अधिकारिता नीति (२००१) को क्रियान्वित किया गया और उनके अस्तित्व, सुरक्षा और विकास को सुनिश्चित किया गया।

११. २००७–१२ के दौरान सरकार ने पाया कि सभी सरकारी योजनाओं के सभी लाभार्थियों में कम से कम ३३ प्रतिशत महिलाएं और लड़कियां थीं। महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम के समर्थन के लिए कृषि, पशुपालन,

डेयरी, मत्स्य पालन, हथकरघा, हस्तशिल्प, खादी और ग्रामोद्योग, रेशम उत्पादन के पारंपरिक क्षेत्रों में कमजोर और संपत्तिहीन महिलाओं को कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता है।

१२. बारहवीं पंचवर्षीय योजना (२०१२–१७) के लिए नीतियां/योजनाएं तैयार करने में महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (एमकेएसपी) जो राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) का एक उप–घटक है, को महिला किसानों की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए शुरू किया गया था, और उन्हें सामाजिक, कानूनी, आर्थिक और तकनीकी सशक्तिकरण हासिल करने में मदद करें।

स्टेट इंडस्ट्रियल एंड डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया सिडबी, ने महिला उद्यमियों की सहायता के लिए निम्नलिखित योजनाएं भ्रुरु की हैं।

१. महिला उद्यम निधि

२. महिला विकास निधि

३. महिलाओं के लिए सूक्ष्म ऋण योजना

४. महिला उद्यमिता विकास का

५. महिला समृद्धि योजना

६. उद्योगिनी योजना

७. मुद्रा योजना

८. स्त्री भाक्ति पैकेज

९. देना भाक्ति योजना

८. भारत में महिला उद्यमियों के लिए समस्याएं–

महिला उद्यमियों कक लिए व्यवसाय को सफलतापूर्वक स्थापित और संचालित करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें कई अभाव शामिल हैं जैसे कि वित्त की कमी, सुरक्षा और वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए सही बाजार खोजना। कई शोध से यह बात सामने आई है कि महिलाएं पारिवारिक व्यवसाय में कॉफी योगदान देती हैं। महिला उद्यमियों द्वारा समस्याओं और बाधाओं के अनुभव के परिणामस्वरुप महिला उद्यमिता का विस्तार सीमित हो गया है। महिला उद्यमियों के सामने आने वाली प्रमुख बाधाएँ इस प्रकार है।[1]

देश की सरकार और साथ ही विभिन्न विकास संगठन विभिन्न योजनाओं, प्रोत्साहनों और प्रचार उपायों के माध्यम से महिला उद्यमियों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहे हैं।

[1]Swati singh,2015, Astudy of the role of women entrepreneurs in india(with special Referance to selecte manufacturing unit in Kanpur) page no 27-28.

व्यवसाय शुरू करने का प्रबंधन करने वाली महिलाओं को विकास के चरणों में समस्याओं के रूप में उद्धृत किया गया है जैसे अपर्याप्त कार्यशील पूंजी, खराब तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल, विपणन तकनीकों की कमी, कार्य कार्य स्थलों और सुरक्षा और बुनियादी ढांचे की कमी, शत्रुतापूर्ण व्यावसायिक वातावरण, खराब परियोजना और योजना कौशल और उपलब्ध सहायता कार्यक्रमों के बारे में जानकारी की कमी (आईएलओ, २००१)।

- **वित्त तक पहुंच:** महिला उद्यमियों को अपने वित्तपोषण विकल्पों और अवसरों के बारे में बहुत कम जानकारी होती है। मोबाइल फाइनेंस एप्लिकेशन के कुछ क्षेत्रों में तेजी से उठाव और विस्तार . जैसे कि मोबाइल मनी, महिला उद्यमियों के लिए उपलब्ध वैकल्पिक वित्तपोषण और बीमा योजनाओं की एक विस्तृत विविधता की संभावना को भी मजबूत कर रहा है। ग्रामीण महिला उद्यमियों को जिन महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है, वह यह है कि बैंकों और वित्तीय संस्थानों द्वारा ऋण को संसाधित करने में लगने वाला समय और सावधि ऋण देने वाली संस्थाओं द्वारा दी गई सख्त चुकौती अनुसूची।
- **पुरुष प्रधान समाज** :. महिला उद्यमियों के लिए सबसे बड़ी बाधा यह है कि वे महिलाएं हैं। एक पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था उनके व्यवसाय की सफलता की राह में सबसे बड़ी बाधा है।
- **महिलाओं की उद्यमिता क्षमता पर अविश्वास** :. वित्तीय संस्थान महिलाओं की उद्यमिता क्षमता पर भरोसा नहीं करते हैं। महिला उद्यमियों को ऋण प्राप्त करने के लिए बैंकरों ने अव्यवहारिक और बेतुकी प्रतिभूतियाँ रखीं।
- **पारिवारिक दायित्व:** .महिलाओं के पारिवारिक दायित्व भी उन्हें विकसित और विकासशील दोनों देशों में प्रभावी उद्यमी बनने से रोकते हैं। ष्बच्चों, घर और बड़े आश्रित परिवार के सदस्यों के लिए प्राथमिक जिम्मेदारी होने के कारण, कुछ महिलाएं अपना सारा समय और ऊर्जा अपने व्यवसाय में लगा सकती हैं।
- **कम गतिशीलता:.** दिन.रात और यहां तक कि विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों में यात्रा करने का आत्मविश्वास पुरुष उद्यमियों की तुलना में महिलाओं में कम पाया जाता है। यह महिला उद्यमियों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और गतिशीलता की स्वतंत्रता के निम्न स्तर को दर्शाता है।
- **शिक्षा की कमी** :. आधुनिक तकनीकी परिवर्तनों का ज्ञान, व्यक्ति का ज्ञान और शिक्षा स्तर व्यवसाय को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। भारत में महिलाओं की साक्षरता दर पुरुष जनसंख्या की तुलना में निम्न स्तर पर पाई जाती है। विकासशील देशों में कई महिलाओं के पास सफल उद्यमिता के निर्माण के लिए आवश्यक शिक्षा का अभाव है। वे नई तकनीकों से अनजान हैं या उनके उपयोग में अनुभवहीन हैं, और अक्सर अनुसंधान करने और आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं।
- **जोखिम लेने में असमर्थता:** निम्न स्तर का जोखिम लेने वाला रवैया महिला उद्यमियों को प्रभावित करने वाला एक अन्य कारक है। पैसे का निवेश, संचालन को बनाए रखना और अधिशेष पीढ़ी से पैसे वापस लेने के लिए उच्च जोखिम लेने वाला रवैया, साहस और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है महिलाएं आमतौर पर रूढ़िवादी होती हैं और इसलिए जोखिम लेने की हिम्मत नहीं होती है।
- **कर्मचारियों का प्रबंधन:** कर्मचारियों का प्रबंधन एक और चुनौती है जिसका सामना भारत में महिला उद्यमी करती हैं। किसी व्यवसाय की सफलता के लिए अच्छे कर्मचारियों की तलाश और उन्हें बनाए रखना महत्वपूर्ण है,लेकिन भारत में महिला उद्यमियों के लिए यह समस्याग्रस्त हो सकता है।

महिला उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना–

महिला उद्यमियों के सशक्तिकरण और उद्यमी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी के लिए सभी क्षेत्रों में सही कार्यावाही की आवश्यकता है। महिला उद्यमियों के प्रभावी विकास के लिए निम्नलिखित उपायों पर ध्यान दिया जा सकता है।

१. सभी विकास कार्यक्रमों के लिए महिलाओं को विशिष्ट लक्ष्य समूह के रुप में विचार विमर्श करें।

२. सरकार की ओर से बेहतर शैक्षिक सुविधाएं और योजनाएं महिलाओं तक पहुंचाई जानी चाहिए।

३. महिला समुदाय को प्रबंधन कौशल पर पर्याप्त प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किए जाने चाहिए।

४. महिलाओं में निर्णय लेने की भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

५. व्यावसायिक प्रशिक्षण जो महिला समुदाय को उत्पादन प्रक्रिया और उत्पादन प्रबंधन को समझने में सक्षम बनाता है, को बढ़ाया जा सकता है।

६. महिला पॉलिटेक्निक और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में कौशल विकास किया जाना चाहिए। कौशल, जो प्रशिक्षण सह –उत्पादन कार्यशालाओं में कार्य करने के लिए रखा जाता है।

७. महिला उद्यमियों के लिए पेशेवर क्षमता और नेतृत्व कौशल पर बल दिया जाना।

८. महिला उद्यमियों को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण और परामर्श दिया जाए जो महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी और सफलता का डर जैसे मनोवैज्ञानिक करणों को दूर कर सकें।

९. एनजीओ के लिए प्रतिबद्ध एनजीओ, मनोवैज्ञानिकों, प्रबंधकीय विशेषज्ञों की और तकनीकी व्यक्तिगत सहायता से परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए।

१०. प्रशिक्षण कार्यक्रमों की निरंतर निगरानी और सुधार।

११. अधिक निष्क्रिय महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए महिला प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए, जिसमें स्वयं की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पहचानना और उन्हें व्यक्त करना सिखाया जाए।

१२. राज्य वित निगम और वित संस्थानों को महिला उद्यमियों को विशुद्ध रुप से व्यापार संबंधी वित्त का विस्तार करने के लिए कानून द्वारा अनुमति देनी चाहिए।

१३. वित्तीय संस्थानों को लघु उद्योग और बड़े पैमाने पर उद्यम दोनों के लिए अधिक कार्यशील पूँजी सहायता प्रदान करनी चाहिए।

१४. स्थानीय स्तर पर महिला उद्यमियों को सूक्ष्म ऋण प्रणाली और उद्यम ऋण प्रणाली का प्रावधान करना।

१५. औद्योगिक सम्पदा भी महिलाओं द्वारा बनाए गए उत्पादों के प्रदर्शन और बिक्री के लिए विपणन आउटलेट प्रदान कर सकती है।

निष्कर्ष–

उद्यमिता विकास, आर्थिक व सामाजिक विकास का उपकरण है। उद्यमिता विकास कि प्रक्रिया के माध्यम से विकास के अंतर को पाटना तभी संभव होता है, जब देश में अपेक्षित मात्रा में कुशल उद्यमी हों। 'उद्यमिता' विकास के माध्यम से, राष्ट्र की मानवीय सम्पदा का अनुकूलतम उपयोग, आर्थिक व सामाजिक विकास के उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होता है। इसमें पुरुष व महिला उद्यमियों का साझा सहयोग आवश्यक होता है। विकसित देशों में पुरुष व महिला उद्यमी समान रुप से आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सहभागी होते हैं, जब कि अल्पविकसित देशों में महिला उद्यमियों की सहभागिता अत्यंत सीमित होती है।

भारत में स्वतंत्रता के उपरांत महिला उद्यमिता विकास के प्रयास, केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों के समन्वित सहयोग से किये जा रहे हैं। २०११ की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी में ४८.५ प्रतिशत महिलाएँ हैं। आर्थिक व सामाजिक विकास, मानव संसाधन के अनुकूलतम उपयोग पर निर्भर होता है।

वर्तमान में भारत में विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी एजेन्सीज भी महिलाओं को उद्यमिता की ओर आकर्षित कर रही हैं। जैसे – महिला–मण्डल, विभिन्न राज्यों में स्थापित वित्त–निगम, महिला योजना, सरकारी तथा गैर सरकारी बैंक, जैसे – बैंक ऑफ इण्डिया की प्रियदर्शना योजना, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया के सेण्ट कल्याणी योजना, राजस्थान महिला मण्डल, राष्ट्रीय ग्रामीण योजना, ग्रामीण विकास कार्यक्रम आदि। भारत में महिला उद्यमियों को विभिन्न सरकारी संस्थाओं व बैंकों (सरकारी व गैर सरकारी दोनों) के द्वारा व्यापक स्तर पर रियायती ब्याज दरों पर ऋण की सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं। महिलाओं के लिए उद्यमिता के क्षेत्र में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। इन सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत में महिला उद्यमियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

सुझाव–

- विश्व स्तर पर महिला उद्यमियों को एक संगठित व्यावसायिक उद्यम की सफलतापूर्वक योजना बनाने के लिए पूर्व उद्यमी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है
- विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों को छात्रों के बीच उद्यमिता संस्कृति और मानसिकता को बढ़ावा देने के लिए केंद्रित सामग्री वाले रचनात्मक और अभिनव उद्यमशीलता मॉड्यूल तैयार करना होगा।
- वित्त उत्पादन प्रक्रियाओं में सुधार और तेजी लाने के लिए महिला उद्यमियों की चुनौतियों पर विचार करते हुए नीतियों की समीक्षा और पुनर्रचना की आवश्यकता है।
- महिला उद्यमियों को किसी देश की आर्थिक गतिविधि में बिजनेस स्टार्टअप के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए गैर सरकारी संगठनों, बैंकों और वित्तीय संस्थानों द्वारा अधिक रास्ते और प्लेटफॉर्म पेश किए जाने की आवश्यकता है। महिलाओं को उद्यमिता में उद्यम करने के लिए प्रेरित करने में शिक्षा सकारात्मक बूस्टर है। शिक्षा के साथ महिलाएं आत्मविश्वासी हो सकती हैं और अपनी ताकत को पहचानने में अधिक सक्षम हो सकती है।
- महिला उद्यमियों को उनकी नवोन्मेषी प्रवृत्ति विकसित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम प्रदान किए जाने चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Amit singh khokhar, Dr. Bharat singh, Role of women entrepreneurship in inclusive growth.
2. Rouf Ahmad bhat 2015, Role of Education in Empowerment of women in india. Journal of Education and practice ISSN 2222-1735 Vol.6,No. 10.

3. Khushboo singh, importance of education in Empowerment of women in india. International Research journal ISSN-2456-2831 Vol.1 August 2016, pp.39-48.
4. WWW.censusindia.gov.in
5. WWW.indiacelebrating.com
6. डॉ. एस. पी. माथुर, भारत में उद्यमिता विकास २०१०, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस मुम्बई।
7. डॉ. मिलिन्द कोठारी, उद्यमिता विकास २०१६, रमेश बुक डिपो जयपुर– नई दिल्ली ।
8. डॉ. पी. सी. जैन, डॉ. एन. एल. शर्मा, उद्यमिता के मूलाधार (२००७) रमेश बुक डिपो जयपुर– नई दिल्ली.
9. B Yasodha Jagadeeswari Nov. (2015), Inclusive Growth through Women Entrepreneurship- Case Studies in Marketing Success fromTamilnadu, International Journal of Multidisciplinary Research and Development, Volume 2; Issue 11; November 2015; Page No. 61-65.
10. Ranbir singh, women entrepreneurs**:** A study of current status, challenges and future perspective.International journal of management research and review ISSN-2249-7196 Vol.3 December 2013.
11. Swatisingh,2015, Astudy of the role of women entrepreneurs in india(with special Referance to selecte manufacturing unit in Kanpur).pp.90-92
12. Satish Kumar, Women entrepreneurs and Their Participation in Madhya Pradesh.pp.102
13. Hisrich,R. and O'Brien, M.(1981) "The women Entrepreneur from a Business and Sociological Perspective", Babson College Centre for Entrepreneurial Studies.
14. Dias, J. and McDermott, J. (2006), "Institutions, Education, and Development: The Rolr of Entrepreneurs", Journal of Development Economics,80:pp.299-328.
15. Charest,M (1995) "CEO exmines the quality of life for women in todays environment", Reprinted in Women in Management,5(4),1-3.
16. Khanka, S.S.(1988) "women Entrepreneurship in India", Journal of Assam University,3(1), January pp.11-16.
17. Kabeer, N. (2012). Women's economic empowerment and inclusive growth: labour markets and enterprise development.
18. Ali, A. Y. S., & Mahamud, H. A. (2013). Motivational factors and performance of women entrepreneurs in Somalia. Journal of Education and Practice.